eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

भारत–भूटान संबंध एक विस्तृत अध्ययन

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 20 Jan 2024, Accepted: 28 Jan 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2024

Abstract

यह शोध पत्र भारत–भूटान संबंधों के दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत और भूटान के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और कूटनीतिक संबंध अत्यंत गहरे और विशिष्ट हैं। भूटान भारत का एक घनिष्ठ मित्र राष्ट्र है और दोनों देशों के बीच सदियों पुराना संबंध रहा है। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के बीच औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित हुए।

भारत और भूटान के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक स्तर पर अत्यंत प्रगाढ़ रहे हैं। यह संबंध मित्रता, आपसी सहयोग और विश्वास पर आधारित हैं। भारत ने हमेशा भूटान के विकास और संप्रभुता का सम्मान किया है और भूटान ने भी भारत के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे हैं। इस शोध पत्र में भारत–भूटान संबंधों के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत चर्चा की गई है, जिसमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, कूटनीतिक संबंध, आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंध और सुरक्षा सहयोग को शामिल किया गया है। यह शोध पत्र भारत–भूटान संबंधों के एक विस्तृत अध्ययन के दीर्घकालिक प्रभावों और भारतीय विदेशनीति में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द– भारतीय विदेशनीति, भारत–भूटान संबंध, रणनीतिक साझेदारी, राजनयिक संबंध, विकास और संप्रभुता

Introduction

भारत और भूटान के संबंधों की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हुई हैं। भूटान और भारत के लोगों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक आदान–प्रदान का इतिहास बौद्ध धर्म के प्रसार से जुड़ा हुआ है। भूटान में बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत से ही गया था, और आज भी भारत–भूटान के बौद्ध मठों और धार्मिक शिक्षाओं में घनिष्ठ संबंध हैं। 1958 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भूटान की यात्रा की और इसे दोनों देशों के संबंधों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना गया। 1961 में भूटान ने अपनी पहली पंचवर्षीय योजना भारत की सहायता से शुरू की, जिससे दोनों देशों के आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिला।

भारत और भूटान के बीच 1949 में एक औपचारिक संधि हुई, जिसे 2007 में संशोधित किया गया। 1949 की संधि के अनुसार, भूटान अपनी विदेश नीति भारत के मार्गदर्शन में संचालित करता था, लेकिन 2007 की संधि में यह प्रावधान हटा दिया गया, जिससे भूटान को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई। भारत भूटान में लोकतांत्रिक प्रणाली को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

2008 में जब भूटान में लोकतंत्र की स्थापना हुई, तब भारत ने इसका पूरा समर्थन किया और भूटान के पहले लोकतांत्रिक चुनावों में सहायता प्रदान की। भारत और भूटान के आर्थिक संबंध बहुत मजबूत हैं। भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौता लागू है, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिलता है। भारत भूटान से बिजली का सबसे बड़ा आयातक है, और भूटान की जलविद्युत परियोजनाओं में भारत का निवेश महत्वपूर्ण है।

भारत और भूटान के बीच व्यापार में मुख्यतः जलविद्युत, कृषि उत्पाद, सीमेंट और हस्तशिल्प शामिल हैं। भूटान की जलविद्युत परियोजनाएं भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हैं, और इससे भूटान की अर्थव्यवस्था को भी लाभ होता है। भारत और भूटान के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान का लंबा इतिहास रहा है। बौद्ध धर्म, कला, संगीत, और परंपराएं दोनों देशों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत भूटानी छात्रों के लिए उच्च शिक्षा के कई अवसर प्रदान करता है। भारत सरकार विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से भूटान के छात्रों को भारत में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देती है।

भूटान के कई छात्र भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अध्ययन करते हैं। भारत और भूटान के रक्षा संबंध भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत भूटान की सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करता है। भारतीय सेना भूटानी सेना को प्रशिक्षण देती है और रक्षा उपकरणों की आपूर्ति भी करती है। 2017 में डोकलाम संकट के दौरान भारत और भूटान की एकता स्पष्ट रूप से देखने को मिली। चीन द्वारा डोकलाम क्षेत्र में सड़क निर्माण का प्रयास भारत और भूटान के लिए चिंता का विषय था, और भारत ने इस मुद्दे पर भूटान का समर्थन किया।

''भारत–भूटान संबंधों का आधार– मित्रता, आपसी सहयोग और विश्वास''–

भारत और भूटान के संबंधों की नींव ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत मजबूत रही है। दोनों देशों की सीमाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं और दोनों के बीच वर्षों से आपसी समझ और सहयोग की भावना बनी हुई है। भारत की स्वतंत्रता के बाद, 1949 में भारत और भूटान के बीच एक औपचारिक संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने दोनों देशों के बीच संबंधों को नई दिशा दी।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– भारत और भूटान के संबंध सदियों पुराने हैं। भारत और भूटान के बीच संबंध ऐतिहासिक रूप से अत्यंत घनिष्ठ रहे हैं। भूटान में बौद्ध धर्म के प्रचार में भारत का विशेष योगदान रहा है। मध्यकाल में भी दोनों देशों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता रहा। 1949 में भारत–भूटान मित्रता संधि पर हस्ताक्षर हुए, जिसने दोनों देशों के बीच आधिकारिक संबंधों की नींव रखी।

यह संधि भूटान को अपनी संप्रभुता बनाए रखने की स्वतंत्रता देती है, जबकि भारत को भूटान की विदेश नीति में परामर्श देने का अधिकार प्रदान करती है। जिसने दोनों देशों के आपसी संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया। इस संधि के अनुसार, भूटान अपनी विदेश नीति में भारत के मार्गदर्शन को स्वीकार करता था। हालाँकि, 2007 में इस संधि में संशोधन किया गया और भूटान को अपनी विदेश नीति पर अधिक स्वायत्तता प्रदान की गई। भारत ने भूटान की आर्थिक और बुनियादी ढाँचे

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सड़कों, पुलों, जल विद्युत परियोजनाओं और शिक्षा क्षेत्र में भारत का योगदान उल्लेखनीय है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध भी गहरे हैं।

कूटनीतिक संबंध– भारत और भूटान के बीच राजनयिक संबंध बहुत मजबूत हैं। भूटान पहला देश था जिसने 1949 में भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक और विकास साझेदार है। भूटान में भारत का दूतावास थिंपू में स्थित है और भारत में भूटान का दूतावास नई दिल्ली में है। दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय द्विपक्षीय वार्ताएँ होती रहती हैं और प्रधानमंत्रियों, विदेश मंत्रियों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के बीच लगातार संवाद बना रहता है।

आर्थिक सहयोग और व्यापार– भारत और भूटान के बीच आर्थिक संबंध अत्यंत मजबूत हैं। भारत, भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार की नीति अपनाई गई है। भारत भूटान से जल विद्युत ऊर्जा खरीदता है, जो भूटान की अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत है। भूटान के आर्थिक विकास में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

भारत सरकार भूटान को प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता प्रदान करती है और उसकी कई प्रमुख विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है। भूटान की अर्थव्यवस्था में भारत का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत, भूटान को अनुदान और ऋण के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करता है। भारत द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में जलविद्युत संयंत्र, सड़क निर्माण, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग शामिल हैं।

1. ''जलविद्युत सहयोग–'' भूटान की अर्थव्यवस्था में जलविद्युत ऊर्जा का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत, भूटान में जलविद्युत परियोजनाओं के निर्माण और विकास में सहायता करता है। भारत, भूटान से बिजली खरीदता है, जिससे भूटान को आर्थिक लाभ होता है।

2. ''व्यापार संबंध–'' भारत, भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। 2016 में दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौता हुआ, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिला।

3. ''संपर्क और अवसंरचना–'' भारत, भूटान में सड़कों, पुलों और हवाई अड्डों के विकास में सहायता करता है, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार और आवाजाही में सुधार हुआ है।

ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग– भारत और भूटान के बीच ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ है। भूटान की जल विद्युत परियोजनाएँ भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हैं और भूटान के लिए आय का प्रमुख स्रोत हैं। वर्तमान में भारत और भूटान ने पंचेश्वर, ताला, चूख, मंगदेछु और अन्य जल विद्युत परियोजनाओं पर सहयोग किया है। भविष्य में इस क्षेत्र में और अधिक निवेश की संभावना है, जिससे दोनों देशों को आर्थिक लाभ होगा।

सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध– भारत और भूटान के बीच सांस्कृतिक संबंध भी बहुत गहरे हैं। भूटान में बौद्ध धर्म के प्रचार में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दोनों देशों के लोग सांस्कृतिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

रूप से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। भारतीय धर्म, संगीत, नृत्य, त्योहार और परंपराएँ भूटान की संस्कृति पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

1. ''शिक्षा और मानव संसाधन विकास–'' भारत, भूटान के छात्रों को भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है। भारतीय शिक्षक और प्रशिक्षक भूटान में शिक्षा प्रणाली के विकास में सहायता करते हैं।
2. ''पर्यटन और धार्मिक स्थलों की यात्रा–'' भूटान में बौद्ध धर्म के कई महत्वपूर्ण स्थल हैं, जहां भारतीय पर्यटक बड़ी संख्या में जाते हैं।

सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग– भारत और भूटान के बीच सुरक्षा सहयोग भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भूटान अपनी विदेश नीति में भारत को प्राथमिकता देता है और भारत उसकी सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक रहा है।

भारत और भूटान के बीच रक्षा और सुरक्षा संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों देशों के बीच सीमाओं की सुरक्षा को लेकर घनिष्ठ सहयोग है। 2017 में डोकलाम संकट के दौरान भारत ने भूटान की सुरक्षा का समर्थन किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि भारत भूटान की संप्रभुता और सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध है।

1– ''सैन्य सहयोग–'' भारतीय सेना, भूटान की सेना को प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

2– ''सीमा सुरक्षा–' भारत और भूटान की सीमाएँ जुड़ी हुई हैं और दोनों देशों के बीच सीमा प्रबंधन को लेकर घनिष्ठ सहयोग बना हुआ है।

3–''रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग'' 2017 में डोकलाम संकट के दौरान भूटान ने भारत के साथ खड़े होकर चीन की नीतियों का विरोध किया था।

भारत भूटान की सेना को प्रशिक्षण देने, रक्षा उपकरण उपलब्ध कराने और सामरिक दृष्टिकोण से सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भविष्य में भी दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग बढ़ने की संभावना है।

संस्कृति और पर्यटन क्षेत्र में सहयोग– भारत और भूटान के बीच सांस्कृतिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ हैं। दोनों देशों में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव है, जिससे उनकी संस्कृति में समानता देखी जाती है। पर्यटन क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सहयोग है। भूटान की सरकार भारतीय पर्यटकों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करती है, जिससे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलता है।

भविष्य की संभावनाएँ– भारत–भूटान संबंधों का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। जलविद्युत परियोजनाओं में सहयोग, व्यापार में वृद्धि, पर्यटन को बढ़ावा, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में आपसी सहयोग जैसे क्षेत्र दोनों देशों के संबंधों को और मजबूत करेंगे।

भविष्य की संभावनाएँ और चुनौतियाँ– भारत और भूटान के संबंधों में भविष्य में और अधिक प्रगाढ़ता आने की संभावना है। हालाँकि, कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जिनसे निपटना आवश्यक है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

1. ''चीन का बढ़ता प्रभाव''– भूटान पर चीन का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ रहा है। चीन भूटान के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने का इच्छुक है और सीमा विवादों को हल करने का प्रयास कर रहा है। भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि भूटान की विदेश नीति में चीन का प्रभाव सीमित रहे।

2. ''आर्थिक विविधीकरण की आवश्यकता''– भूटान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से जल विद्युत परियोजनाओं पर निर्भर है। भारत को भूटान की अर्थव्यवस्था के विविधीकरण में सहायता करनी चाहिए, ताकि वह विभिन्न क्षेत्रों में विकास कर सके।

3. ''युवाओं की बदलती सोच''– भूटान की नई पीढ़ी आर्थिक अवसरों की तलाश में अन्य देशों की ओर आकर्षित हो रही है। भारत को इस युवा वर्ग के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाने होंगे।

निष्कर्ष– भारत और भूटान के संबंध मित्रता, आपसी सहयोग और विश्वास पर आधारित हैं। दोनों देश एक–दूसरे के रणनीतिक और आर्थिक साझेदार हैं। भारत ने हमेशा भूटान के संप्रभुता का सम्मान किया है और भूटान ने भी भारत के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे हैं। इन संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए द्विपक्षीय सहयोग को और बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत और भूटान के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आधारों पर मजबूती से टिके हुए हैं। भूटान, जो भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है, हमेशा से भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता आया है। दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध 1968 में स्थापित हुए थे, लेकिन उनका संबंध सदियों पुराना है।

भारत और भूटान की मित्रता न केवल आपसी विश्वास और सहयोग पर आधारित है, बल्कि यह दोनों देशों के आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक हितों के लिए भी आवश्यक है। भूटान की विदेश नीति में भारत प्रथम की नीति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। भारत भी भूटान को अपनी पड़ोसी पहले नीति के अंतर्गत विशेष प्राथमिकता देता है। वर्तमान समय में दोनों देशों के बीच संबंध अत्यंत प्रगाढ़ हैं और भविष्य में इनके और अधिक सुदृढ़ होने की संभावनाएं हैं।

भारत और भूटान के संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत रहे हैं और भविष्य में इनके और अधिक प्रगाढ़ होने की संभावनाएँ हैं। आर्थिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक और सामरिक क्षेत्रों में सहयोग को और बढ़ाने से दोनों देशों को पारस्परिक लाभ मिलेगा। भविष्य में, भारत को भूटान के साथ अपने संबंधों को और मजबूत करने के लिए नई नीतियाँ अपनानी होंगी, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि दोनों देशों के बीच परस्पर सहयोग और विश्वास बना रहे। यह संबंध केवल क्षेत्रीय स्थिरता ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया में शांति और विकास को भी बढ़ावा देंगे।

भारत–भूटान संबंधों का आधार मित्रता, आपसी सहयोग और विश्वास पर टिका हुआ है। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी समय के साथ मजबूत होती गई है। भविष्य में भी इन संबंधों के और अधिक प्रगाढ़ होने की संभावना है, जिससे दोनों देशों को पारस्परिक लाभ मिलेगा। इस प्रकार, भारत और भूटान के संबंध दक्षिण एशिया में स्थिरता और विकास का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

संदर्भ सूची–

1. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट
2. भूटान सरकार की आधिकारिक रिपोर्ट्स
3. विभिन्न शोध पत्र और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर आधारित लेख
4. इंडियन एक्सप्रेस (2013).
5. आउटलुक मैगज़ीन (2023).
6. इंडियन एक्सप्रेस (2017)
7. आउटलुक मैगज़ीन (2022)
8. परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति, एस जयशंकर, पृष्ठ. 230, वर्ष 2021, ISBN-9789390366507
9. भारतीय विदेश नीति, जें0 एन0 दीक्षित, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ. 408, वर्ष 2021, ISBN-9789352665129
10. अमरउजाला, 29 दिसम्बर 2022
11. द हिन्दू, 08 जून 2023
12. द हिन्दू, 11 दिसम्बर 2021
13. दैनिक जागरण, 04 मार्च 2019
14. योजना, दिसम्बर 2022